भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 8 | अंक 06 | उदयपुर शनिवार 01 अप्रेल 2023 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

महावीर स्वामी की पड़

- डॉ. तुक्तक भानावत -

पड़ से तात्पर्य पट्ट अर्थात् कपड़ा से है। कपड़े पर जो चित्रकारी की जाती है वह पड़ चित्रण कही जाती है। पड़ को फड़ भी कहा जाता है। सबसे पहले देवनारायण की पड़ बनीं। उसके बाद पाबूजी की पड़ अस्तित्व में आई। ये दोनों प्रसिद्ध लोकदेवता हैं। देवनारायण मुख्यत: गुजर जाति के तथा पाबूजी राईका समाज में सर्वाधिक मान्य हैं। इन दोनों पर सबसे पहले डॉ. महेन्द्र भानावत ने लिखा।

पड़ में इनकी जीवनलीला से जुड़ी सम्पूर्ण गाथा का चित्रण मिलता है। ये चित्र शाहपुरा-भलवाड़ा के चितेरों द्वारा बनाये जाते हैं जो जोशी हैं। इनमें श्रीलाल जोशी ने सर्वाधिक प्रसिद्धि प्राप्त की। वे पद्मश्री से भी सम्मानित हुए। उन्होंने परम्परा से आगे बढ़ते प्रयोगधर्मी अन्य पड़-चित्र बनाये और विदेशों में भी कई संग्रहालयों में उन्होंने अपना यह योगदान दिया।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण प्रसंग पर भीलवाड़ा के कलाकर्मी निहाल अजमेरा ने राजस्थान की पारम्परिक पड़ शैली में महावीर स्वामी की पड़ तैयार करवाकर एक सार्थक अभिनव प्रयोग किया। इस पड़ में दाईं से बाईं ओर चित्रत ऊपर व नीचे दो भाग हैं। ऊपर के भाग में क्रमश: त्रिशला के सौलह स्वपन, इन्द्राणी द्वारा महावीर को सौधर्म इन्द्र को सोपना, राजा सिद्धार्थ और उनके दरबारीगण, जन्मकल्याणक दृश्य, भगवान को मेरु पर्वत पर ले जाना, देव-देवियों द्वारा उनकी स्तुति में नृत्य-गान करना, पर्वत पर जलाभिषेक मनाना, राजकुमार वर्धमान की देव द्वारा सर्प-परीक्षा, संगम देव का अजमुख मानव रूप धारण करना, वर्धमान का महावीर नामकरण एवं पंच परमेष्ठि, अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय तथा सर्व साधुगण के चित्र शोभित हैं।

नीचे के भाग में क्रमश: राजकुमार का कौए की ओर इंगित करते हुए कौआ काला भी है कहना, झूला झूलना, दरबारियों के साथ सिद्धार्थ, मधु-बिन्दु, संसार-दर्शन व तपस्या में लीन भगवान महावीर, रूद्र के उपसर्ग, दीक्षा कल्याणक, वस्त्रालंकार का त्याग व पंचमुष्टि केशलुंचन, आहार देती हुई चन्दनबाला, इन्द्रभूति गौतम का मान भंग, देवताओं द्वारा निर्मित समवसरण में भगवान का धर्मप्रवचन तथा देवताओं द्वारा महावीर के मोक्ष गमन के पश्चात उनके पार्थिव शरीर का अग्नि-संस्कार करना विषयक चित्र मिलते हैं। इस प्रकार इस पड़ में जैसे महावीर का समग्र जीवनचरित ही मूर्तिवंत हो उठा है।

पाबूजी की पड़ की तरह यह पड़ मंच पर दर्शकों के सम्मुख खड़ी कर दी जाती है। तत्पश्चात इसका गान-वाचन प्रारंभ होता है। इसमें दो व्यक्ति होते हैं। एक पड़ चित्रों के बारे में पूछता जाता है जबकि दूसरा नाटकीय लहजे में नृत्यमय लयकारी द्वारा राजस्थानी कथाशैली में उन्हें अरथाता रहता है।

अकल्पनीय अनूठी भेंट

'स्मृतियों के शिखर' में 365 किश्तों के लिए एक बादाम प्रति किश्त भेंट

''शब्द रंजन में 'स्मृतियों के शिखर' की 365 किरणों-किश्तों से लाखों साहित्य, कलाप्रेमियों के मार्गदर्शन हेतु पूर्ण स्वस्थ रहते हुए कलम चलाते रहे आप! बूढ़ा होने का आपको समय ही नहीं मिला। इस हेतु रोज एक रूपये की देशी बादाम अरोगते रहें। इस वास्ते भानावत पिता-पुत्र को 730 की राशि भेज रहा हूं। इसे पौष बड़ा का भोग मान कर स्वीकारें।''

यही नहीं, आगे लिखा- ''अभी 25 बसन्त पंचमी और मनावें। जीवें तो इस तरह कि जिन्दगी निखर उठे। बहार ही बहार हो। होठों से मस्ती की मुरली सदा बजती रहे। मुख-मण्डल पर इन्द्रधनुष-सी छवि सदा बनी रहे। अलमस्ती के झूले में सदा झूलते रहें। मुंह से कोयल की मधुर ध्वनि-सी तरंगें निकलें। जिधर निगाह पड़े उधर नई लहर उठे। वसुन्धरा थिरक उठे, गा उठे। नाच उठे। 365 ही दिन ऐसे निकलें। तन-मन-धन सम्पन्न रहें। यश यौवन से भरे रहें। सौ दीपमालिका देख सकें। चांदी के कटोरे में सोने के चम्मच से रोज खीर पिया करें।''

इन पंक्तियों के साथ 730 रूपये भेजकर भीलवाड़ा के कलाकार निहालचन्द्र अजमेरा ने अपनी अणु उम्र में हमें सचमुच चकित ही नहीं किया, अपनी आत्मीय स्नेहजनित पारिवारिकता का सूत्र-सेतु भी और मंगलकारी कर दिया। निहालजी से हमारा जुड़ाव पिछले छह दशकों से अधिक का है। उन्हीं ने भीलवाड़ में पहलीबार विशाल पैमाने पर गैर समारोह प्रारम्भ कर पूरे देश के विविध क्षेत्रीय गैरों से पूरे विश्व को परिचित करा सबको स्तंभित कर दिया। मैंने भी तब धर्मयुग तथा अन्य पत्रों में लगातार लिखा था। समारोह, संगोष्ठियां आयोजित कर कोमल कोठारी, रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत, विजय वर्मा तथा प्रान्त के बाहर से भी विद्वानों को आमंत्रित किया था। निहालजी की संगीत कला केन्द्र संस्था ने भी तब बड़ा नाम कमाया।

भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक देवीलाल सामर निहालजी की सारी योजनाओं के मूर्तरूप निर्देशक थे जो वर्षों तक कला केन्द्र के अध्यक्ष और मैं सम्मानित सदस्य रहा।

वे सब बातें अब स्मृति मात्र रह गईं पर कमाल ही है कि निहालजी में अब भी हमारी हालचाल पूछी होती रहती है। वे अब भी कलाकार का जीवन्त रूप लिये हैं। अवसर हाथ लगने पर मंच पर अपना नृत्यमय अन्दाज दिखाने का कौशल छोड़ते नहीं हैं। हम सब उनके स्वस्थ चुस्त स्वस्थ जीवन्त बने रहने की अन्तसीय मंगल कामना करते हैं।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

भैरुजी की गोळ

जैसे जनेऊ एक मानता है, संस्कार है, परिपाटी है, वैसे ही गोळ भी एक संस्कार, मानता और आवन्या है। पहनने को जनेऊ और गोळ दोनों पहनी जाती है पर गोळ एक अंगूठी होती है जो हाथ की अंगुली में पहनी जाती है। यह तांबे के तार की बनी होती है। इसे लोक देवता भैरुजी की साक्षी में उनका भोपा देता है तब विशिष्ट संस्कार होता है। भैरुजी के देवरे रातिजगा दिया जाता है। पूरे ब्याह सा माहौल बनता है। सारे सगे संबंधी बुलाए जाते हैं। उसी तरह का जीमण-चूंटण होता है। नेगचार, कांचली, कापड़ा, लेनदेन होता है।

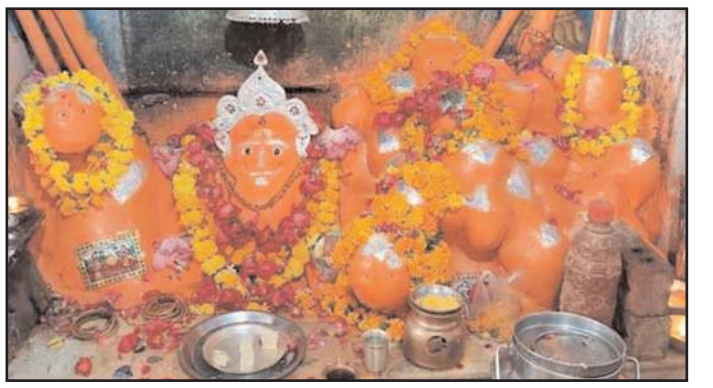

गोळ लेने वाला बनोले खाता है। वर की तरह रहता है। उसी तरह के कपड़े लत्ते पहनता है। जनेऊ में भी वैसा ही माहौल होता है। यह भी एक तरह की जनेऊ ही है। गांवों में कई लोग तो इसे भैरुजी की जनेऊ कहते हैं। गोळ धारण कर व्यक्ति भैरुजी बंदीवान बन जाता है। इसके लिए फलों में कोई एक फल सदा-सदा के लिए और खज में कोई एक खज छोड़ना पड़ता है। फल जैसे कोला, ककड़ी, केरी, टेमरु, आलड़ी और खज यानी जानवर में से तीतर, बकरा, हिरण, हूर, लावट्या में से किसी एक के खाने का त्याग लेना पड़ता है। गोळ औरतें भी धारण करती हैं पर यह संख्या अपेक्षाकृत बहुत कम देखने को मिलती है।

भैरुजी की बींटी तो मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने भी धारण कर भैरुजी से मनधारा कार्य पूरा करवाया था। किस्सा है कि भाड़िया नम पर वे भटियाणीजी को वरण करने गए पर बनास नदी आड़े पड़ी। पूजा की तो उतार दे दिया लेकिन आगे गोमती भारी थी। उसने उतार नहीं दिया। वहां आसोट्या के जंगल में जोर का ढोल बज रहा था। भैरुजी का देवरा था। भोपे को भाव आ रहे थे, राणा घोड़े से उतरे भैरुजी को नमन किया। भोपा बोला- मेरा गाल्यावेल्या बनना पड़ेगा तो सब काम हो जायेगा। राणाजी ने हां भरी चौकी गले में धारण की। बींटी अंगुली में धारण की। भैरुजी ने हुक्म दिया। जितना घोड़ा दौड़ेगा उतना स्थान तालाब बन जाएगा। ऐसे ही घोड़ा दौड़ा तो राजसमंद बन गया। ऐसे कई किस्से हैं।

शास्त्रों में भैरुजी का बड़ा वर्णन मिलता है पर लोकजीवन में तो कई भैरु हैं। यह अलग विषय है। भैरुजी के कई गीत, कई कथाएं, कई चमत्कार हैं। अनंत कथा किस्से हैं। सुनने वाला चाहिए। यहां गीतों की कुछ बानगी दी जा रही है। इसमें भैरुजी की मान्यता और श्रद्धा आस्था का पता चलता है।

(1) भैरु बारा बीघा रो चोंतरो।
भैरु तेरे बीघा री वनराय जी भैरु
आवो क्यूं नी गाढ़ा वेइरयाजी।

(2) डूंगरी पर बैठो भैरु घूघरा बजावे।
घूघरा बजावे भैरु सांकलां खणकावे।

(3) भैरुजी पागां सोवै थारी रूपाली।
सूरत पर मूरम प्यारी।
भैरुजी ने जावा न देस्यां।

(4) भैरुजी ऊबो थांका रायमन्दर रे बारणे

(5) मनै मती कहावो बांझड़ी
गूजरी थनै देस्यां झोल्यां झडूल्यो पूत
नीं रे कवादूं बांझड़ी।

- म. भा

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

Creating Signature Address **Since 1998**

27 Projects | 4000 Happy Faces | 24 years of Legacy | 25 Lac sq.ft. Space Delivered | 8 Ongoing Projects

ARCHI GROUP OF BUILDERS

Phase 1 RERA Reg. No.: **RAJ/P/2019/1027**
Phase 2 RERA Reg. No.: **RAJ/P/2019/1028**

Archi
PEACE PARK
feel the peace.....

2BHK, 3BHK & 4 BHK
Luxury Apartments

Block A, B, C & D **Delivered** | Block E, F & G **Ready for Possession**

Amenities are operational

Site Office: 1 - New Vidhya Nagar, HM, Sec. 4, BSNL Road, Udaipur - 313002 (Raj.)
For Booking: +91 80035 97929, 75065 04498

RERA Reg. No.: **RAJ/P/2019/964**

ARCHI
ARCADE

10+ FAMILIES HAPPILY staying

2BHK, 3BHK & 4 BHK **Premium Apartments** | Amenities Are **Operational** | Ready For **Possession**

- ✓ Jain Temple
- ✓ Hi-tech Gymnasium
- ✓ Indoor Games
- ✓ Party Hall

Site Office: 1 - New Bhopalpura, Behind Laxman Vatika, Near Jain Temple, Udaipur (Raj.)
For Booking: +91 94141 55525, 94604 87521

RERA Reg. No.: **RAJ/P/2018/625**

Archi Royal City

1/2/3 BHK
MODERN APARTMENTS
READY FOR POSSESSION

Site Office: Opp. Transport Nagar, Airport Road, Pratapnagar, Udaipur (Raj.) 313001
For Booking: +91 95880 16563, 77758 47711

RERA Reg. No.: **RAJ/P/2018/788**

ARCHI'S GALAXY
मेरा घर, मेरा अभिमान

मुख्यमंत्री जन आवास योजना प्रारूप 3–ए के अन्तर्गत

2 BHK FLATS
(Starting from ₹20.51 Lakh*)
LUXURY LIFESTYLE WITH MODERN AMENITIES

Site Address: NH 76, Near Zinc Smelter, Opp. Debari Power House, Udaipur - 313001 (Raj.)
For Booking: +91 89551 48546, 93526 66122

Head Office:
ARCHI GROUP OF BUILDERS
Ground Floor, Archi Arihant Apartments,100 Feet Road, Shobhagpura, Udaipur - 313001 (Raj.)

www.archigroup.in

स्मृतियों के शिखर (161) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दान शील तप भाव से भीगे सुन्दरलाल दुग्गड़

सृष्टि में मनुष्य सबसे सुन्दर जीव है। पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, वायुकाय और वनस्पतिकाय इन सबमें पृथ्वी पर जितने भी जीव विचरण करते हैं उन सबमें और अन्यों में मुनष्य सबसे सुन्दरतम है।

जैनदर्शन का यह सत्य कथन निर्विवाद है। अन्यों ने भी यहीं माना है लेकिन सारे मनुष्यों में श्रेष्ठ कौन है? सारे फूलों में श्रेष्ठ फूल कौनसा है? ऐसे ही चराचर जगत में जिस-जिस की भी सत्ता है उनमें कौन श्रेष्ठत्व लिये है। स्पष्ट है, सभी सुन्दर नहीं होते। और कविवर दिनकर ने भुजंग के संदर्भ में लिखा-

क्षमा सोहती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दन्तहीन विषहीन विनीत सरल हो।।

सुमित्रानन्दन पंत ने कहा था-

'सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर
मानव तुम सबसे सुन्दरतम।'

लोकसाहित्य में फूलों के लिए कथन आता है-कौन-सा है श्रेष्ठ फूल? अधिकांश गुलाब के पक्ष में जायेंगे पर वह लोकजीवन है जो अपने ढंग से सोचता, समझता और चिंतन करता है। वहां समूह का हित चिन्तन है। परमार्थ का सोचन है। अच्छा दिखने लगने या कि खुशबू में नहाने का नहीं। इसलिए श्रेष्ठ फूल कपास का कहा जो आदमी का तन ढकता है। नंगी दुनिया को वस्त्र से ढकने का कार्य कहीं भी श्रेष्ठ से कम नहीं है। द्रौपदी की भरी सभा में उतारी जा रही इज्जत की रक्षा वस्त्र ने ही की थी। लाज बचाने वाला बड़ा होता है इसीलिए कहावत चल पड़ी- 'लाज बचाई लाखों पाये।'

आदमियों में दानी बड़ा है। इसके लिए कहा गया- 'दानी बड़े तिहु लोकन में।' दानी वह जो दान दे पर बदले में ले कुछ नहीं। कोई अपेक्षा नहीं रखे और किसी की अपेक्षा भी नहीं करे। दान करते वक्त यह न सोचे कि वह पात्र है या नहीं। छलिया तो नहीं है, ठगी तो नहीं है।

यह दूसरा पक्ष हो जायेगा जिसकी तह में जाने के लिए अन्य माध्यमों का सहारा लेना पड़ेगा तब मन में कई प्रकार की उलझनें, विसंगतियां, अच्छे-बुरे भाव पैदा होंगे। जो दानी है, महादानी है, ओघड़दानी है उसका काम देना है, देना ही देना है, न किसी अपेक्षा भाव से और न किसी उपेक्षा भाव से बल्कि मन की शुद्धि से, आत्मा के संतोष से, अपने की तुष्टि से।

उदाहरण बहुत हैं बीते काल के। जो देता है, वह पाता है। दशामाता की कई कहानियों में वर्णन मिल जायेगा। हमारा ही मन छोटा होता है कि जब दे देंगे तो हमारे पास क्या रह जाएगा? बूंद-बूंद भी जाती है तो कहते हैं, पूरा समंदर खाली हो जाता है पर देनेवाले से पूछिये तो कहेगा, समंदर कभी खाली होता ही नहीं, वह तो भरता ही रहता है बल्कि जिस दिन देना बंद कर दिया जायेगा, समंदर खाली होता जायेगा।

मैंने कई प्रांतों के कई तीर्थों का भ्रमण किया है। सब तीर्थों की लीलाएँ देखीं। वे लीलाएँ अदृश्य हैं पर दृश्यवान भी हैं। गुजरात के वीरपुर में संत जलाराम हुए। कहते हैं, उस संत के पास जो भी जाता, खाली यानी भूखा नहीं लौटता। एकबार जलाराम के पास कुछ नहीं बचा और संत पहुँच गये, वे भूखे लौटे।

जलाराम ने प्रण किया कि यदि मैं साधु-संतों को भोजन नहीं करा सकूंगा तो जीवित ही प्राण त्याग दूंगा। भूखा ही देह विसर्जित कर दूंगा। भक्त की ऐसी कठोर प्रतिज्ञा से कृष्ण द्रवित हुए। उन्होंने लक्ष्मीजी से जला को दो रोटियां देने की अर्ज की। लक्ष्मी बोली, 'अपन दोनों चलते हैं। मैं थाली बन जाऊँगी।' कृष्ण बोले- 'मैं भील वेश धारण कर लूंगा।' भील बने कृष्ण ने हाथों में थाली धारण कर ली। जला को कहा, 'इसमें एक रोटी तुम खा लो, एक संतों को दे दो।' दानी को वही तो देना है जिसे कोई अन्य दे रहा है किन्तु वह समझ बैठता है कि देनेवाला वह खुद है।

जलाराम अन्तर्ज्ञानी था। उसे थाली की बजाय लक्ष्मी ही दिखाई दी और भीलवेश में कृष्ण। वह बोला, 'ये रोटियां मैं किसमें लू?' कृष्ण समझ गये। उन्होंने जला को एक बंद झोली थमा दी और कहा- 'इसे कभी कोई न खोले जो भी खोलेगा वह सात जनम नर्क में जायेगा।'

वहीं जलाराम ने लक्ष्मीजी का मन्दिर बनवाया और उसमें वह झोली रखदी। उसके पास ही हाथों में लड्डू लिए पीतल के बालकृष्ण थरपित किये। भक्त जलाराम के नाम से वह झोली आज भी वहां लटकी हुई है। कपड़े की इस झोली को कोई नहीं छूता। किसी को पता नहीं, इसमें क्या है। जबसे जलाराम ने मन्दिर बनवाया तबसे वहां निरन्तर साधु-साध्वी, संत-संताणी, भक्तगण दर्शनार्थी आ रहे हैं। सभी बड़े आदर और प्रेमभाव से भोजन पा रहे हैं। भोजन का यह प्रसाद हमने भी ग्रहण किया।

मेरा उस दिन सारा ध्यान उस झोली और लड्डूलाल कृष्ण की ओर केन्द्रित होता रहा पर उसका रहस्य हाथ नहीं लगा। रात्रि को लोकदेवता कल्लाजी के सेवक सरजुदासजी के माध्यम से

हमने उसका सारा रहस्य जाना। मैं आज तक उस रहस्य- लोक से चकित और स्तंभित हूँ। सच तो यह है कि हमारी यह यात्रा ही रहस्य रोमांच से परिपूर्ण थी। मीरांबाई की खोज में की गई इस यात्रा में हमें यहां आना था कारण कि मीरां भी यहां आकर जलाराम से मिली थी।

ऐसे ही नरसी थे। ये थे तो राजस्थान में डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण पर जूनागढ़ में उनकी धाम चली। ये सिद्धि के दातार थे। इनका कद छोटा था। मांगने वालों की भीड़ हर समय बनी रहती। उनका प्रभाव देखिये कि उनकी देखादेखी आसपास के प्रत्येक ग्रामवासी भी देना सीख गये। एक मन अनाज में से एक सेर दान के लिए निकाल कर हर व्यक्ति नरसी के पास भिजवाता। ऐसे कर बोरीबंध अनाज वहां इकट्ठा होता रहता।

ऐसे ही लोग गायों के लिए घास भेजते। साधु-संतों का तांता तो वहां लगा ही रहता। सभी मुक्त भाव से भोजन पाते। भोजनोपरांत मांगने वालों की लम्बी लाईन लगती। नरसी गादी पर बैठ उसके नीचे से निकाल-निकाल प्रत्येक को दान स्वरूप जो भी राशि उनके हाथ में आ जाती, देते। यह राशि एक रुपया, दो रुपया से लेकर सौ-सौ रुपया तक होती। गादी से उठने के बाद जब वे पलंग पर आते, उनके पास कुछ नहीं रहता। उनके यहां गायें भी खूब पलतीं। दो सौ से अधिक साधु तो गायों की देखभाल ही करते। गुजरात का गोधरा तो गायों का ही रहा। गोधरा नाम भी गायों के कारण पड़ा। यहां नौ-नौ दस-दस लाख तक गायें पलतीं ।

आदरमना सुन्दरलालजी दुग्गड़ में भी जलाराम और नरसी जैसी आत्मा का निवास होने के कारण ही वे दान शील तप भाव बने हुए हैं। ऐसे लोग नामवरी के लिए नहीं, वाहवाही के लिए नहीं, किसी मान-सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, अभिनन्दन के लिए नहीं होते। वे तो चुप-मौन बने रहकर जिस हाथ से जो देते हैं, दूसरे हाथ को भी उसको पता न लगे, ऐसे निस्पृह बने रहकर सेवा करते हैं। केवल दान या सहायता के भाव से देने पर अहंकार की बू बनी रहती है लेकिन सेवा-भाव से देनेवाला कृतज्ञता के भावों से भरकर अभिभूत बना रहता है और ऐसे ही लोगों पर भगवत्कृपा अटूट बनी रहती है।

सेवा में सामर्थ्य के अनुसार देने का भाव बना रहता है। इसमें न प्रतिस्पर्धा होती है न और कोई चाह, एषणा भी नहीं रहती है। रामचरित मानस में कहा गया कि राजा प्रतापभानु प्रतिदिन अनेक प्रकार से दान करता था। (दिन प्रति देइ विविध विधि दाना) किन्तु अहं के भाव से, विषय भोगों की लालसा से दान देने के कारण वह अगले जन्म में राक्षस बना (भयवु निसाचर सहित समाना) विपरीत इसके कोल, भील आदिवासी देखिये जिनकी सेवा में प्रेमरस का भाव था। उन्हें दिव्य प्रेम की प्राप्ति हुई।

मैने दुग्गड़ वंश को रोशन करने वाले सोहनलालजी दुग्गड़ के बारे में बहुत कुछ सुना और उदयपुर में उनकी निस्पृह सादगी से परिपूर्ण सहजमना उदार छवि को देखा तो देखता ही रह गया। कहीं भी नहीं लगा कि उदारमना सोहनलालजी सुदानी हैं, श्रीवर हैं, सेवाधीश हैं।

जलाराम की झोली की तरह ही उन्हें मालूम रहता कि उनके पास कितनी राशि है। वे उतना सब कुछ दे देते और फिर भी लेने वाले की पंगत बनी रहती तो वे कह देते आज का खाता खत्म। कल देखा जायेगा। निराश कोई नहीं होता। उनके साथ लगे लोग उन्हें कहते भी कि जो मांग ले गया है वह अभाव ग्रस्त नहीं था इस पर दुग्गड़ कहते, 'मेरे पास तो वह अभाव ग्रस्त बनकर आया सो वह अभाव ग्रस्त ही था बाकी उसकी वह जाने।'

यह कलयुग है। अब वैसी भावना नहीं मिलती। देनेवाला अपना हित-चिन्तन अधिक देखने लग गया है। जितना देगा उतना उसे मान-सम्मान, आदर अभिनन्दन मिलेगा या नहीं, इसे तोल, झोखकर ही वह देता है।

शिलापट्ट पर स्थायी रूप से नामांकन के लिए लोग अधिक पैसा निकालने लग गये हैं। वे पीढ़ियों तक अपना नाम अमर देखना चाहते हैं। ऐसे लोग भी देखे गये जो होड़ा-होड़ी में एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए बढ़-चढ़कर घोषणाएँ कर वाहवाही लूट लेते हैं, पर बोली रकम नहीं भी देते हैं। दान देने वाले उनके सम्मान में होने वाले समारोह, जन-भागीदारी, सम्मान का तौरतरीका आदि की बारीक जानकारी प्राप्त कर ही उसके अनुकूल दान-राशि देते हैं लेकिन जो असली दानदाता होते हैं वे न किसी को भटकाते हैं और न स्वयं ही भटकी खाते हैं।

ऐसे में सुन्दरलालजी दुग्गड़ का श्रेष्ठत्व यह है कि वे उन उत्कृष्ट और श्रेष्ठ दानवीरों की कोटि लिये हैं जो देने पर भी कुछ नहीं देखते हैं और लेने पर मात्र शुभाकांक्षा के अभिलाषी रहते हैं ताकि वे अपनी देय भावनाओं में निरन्तरता बनाये रख सकें ताकि उनमें कभी कोई टूटन यानि अवरोध न आने पाये। किसी भी व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण पहलू यही है कि वह अपनी शक्ति और सामर्थ्य को पहचानकर तदनुकूल आचरण करे। वह जाने कि उसे जो कुछ मिला है वह केवल उसी के लिए नहीं है, अन्यों की भी उसमें भागीदारी है, जिसे वह सुनिश्चित करे। मान्य श्रीवर दुग्गड़ ने वह सब सुनिश्चित कर रखा है और उन्हें उस परम शक्ति पर पूरा विश्वास है।

वह जितना जो कुछ उन्हें दे रही है, वे मात्र माध्यम बनकर उसे एक स्थान से दूसरे स्थान हेंडओवर कर रहे हैं। डाक पड़ी हुई है जो डाकिये की नहीं है। उसकी नौकरी ही यह है कि जिसके नाम की जो डाक है वह उसके पास पहुँचाये पर सभी एक से नहीं होते। कुछ परायों का अपना लेते हैं। कुछ परायों का पढ़ लेते हैं तो कुछ परायों का न स्वयं रख पाते हैं न उनके पास पहुँचने देते हैं।

मैं इसीलिए मनुष्यों में निरन्तर श्रेष्ठ मनुष्य को ढूंढता रहता हूँ। कई अच्छे कहे जाने वाले की शरण में जाकर भी मैं उनमें अच्छत्व नहीं प्राप्त कर सका इसीलिए लिखा भी-

रद्दी तो अखबार की भी काम की,
आदमी रद्दी हुआ किस काम का।।

मैं ईशवादी, आत्म परमात्मवादी हूँ। धरती खाली नहीं है। अनेक रहस्यों से भरी हुई है। बीकानेर के देशनोक के सुन्दरलालजी जैसे मनुज श्रेष्ठ और भी हों ताकि उनकी पांत-पंगत बढ़ती रहे। ऐसी कोख से जो भी पैदा होगा वह सुन्दर लाल होकर निखरेगा। उनके पास जलाराम की झोली और नरसी की जो बैठक है वह सदैव रहस्यमय बनी रहकर सबको सलामत करती रहे-

सुन्दर है सृष्टि, वृष्टि सुन्दर,
मनुजों में 'सुन्दर' ही सुन्दर ।।

डॉ. सक्का के नाम दर्ज हुए सौ विश्व रिकॉर्ड

उदयपुर (ह. सं.)। स्वर्ण शिल्पी डॉ. इकबाल सक्का ने सूक्ष्म स्वर्ण कलाकृतियां बनाते-बनाते अनूठा कीर्तिमान अपने नाम दर्ज किया है । डॉ. सक्का को सौ रिकॉर्ड विश्व रिकॉर्ड बुक में दर्ज होने पर होप इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सबसे अधिक गोल्ड मिनिएचर के रिकॉर्ड धारक होने का खिताब प्रदान किया गया है। विश्व गिनीज बुक सबसे अधिक रिकॉर्ड होने के कारण डॉ. सक्का नई श्रेणी में शामिल हो गए हैं। डॉ. सक्का सोने की छोटी कलाकृतियों के लिए विश्व रिकॉर्ड की श्रेणी में होप इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में नामित हो गए हैं। इसके लिए भारती कार्यालय महाराष्ट्र के डॉ. अहमद शेख ने डॉ. सक्का को गोल्ड मेडल व प्रमाणपत्र प्रदान किया है।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 अप्रेल 2023

सम्पादकीय

सम्मानों की होड़, पुरस्कारों की बहार

वर्ष के बारह माह में मार्च का महीना अपने अलग ढंग से अहमियत रखता है। हिसाब-किताब की दृष्टि से वर्ष का यह आखिरी महीना है। इस दृष्टि से इस माह में वर्षभर के जो लेनेदेन, अनुदान-सहयोग प्राप्त हुए होते हैं उनका लेखाजोखा करना पड़ता है। नफा-नुकसान की दृष्टि से भी आकलन करना होता है और सरकारी कायदे-कानून को ध्यान में रखते हुए वाजिब कमाई के अलावा जो आय की हुई होती है उसका टेक्स आदि भी चुकाना होता है। बैंकों और साहूकारों से जो लोन लिया होता है उसका पाई-पाई का हिसाब भी करके निश्चिंत होना पड़ता है।

बहुत सी निजी संस्थाएं, सरकारी संस्थान तथा सार्वजनिक ट्रस्ट आदि विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट उपलब्धिपरक व्यक्तियों तथा संस्थानों को उनके अनुकरणीय कार्य-कौशल पर तरह-तरह के सम्मान तथा पुरस्कार प्रदान करते हैं। यह कार्य मुख्यत: सरकार से जुड़े संस्थान प्रतिष्ठान मार्च माह में ही सम्पन्न करते हैं। इसलिए सम्मानों और पुरस्कारों की दृष्टि से यह महीना बड़ी चहल-पहल लिये रहता है। इसमें सम्मान प्राप्तकर्त्ता और प्रदाता दोनों ही खुशमिजाज नजर आते हैं। तरह-तरह के शॉल-दुशालों, स्मृतिचिन्हों तथा सम्मानपत्रों के साथ प्रतीक चिन्ह, पगड़ी, साफा तथा मुख्यत: देय राशि की ओर सर्वाधिक ध्यान रहता है।

यह कलयुग है सो कलयुगशाही का प्रभाव तो गाहेबगाहे मिलता ही है। सम्मानों का प्रारम्भ तो नेक इरादों और ईमानदार चारित्रिक मिजाज के लिए पक्षपात विहीन ही रहता है पर धीरे-धीरे इनका स्वरूप-रूप कुछ अरूप भी होता लगता है। सम्मानप्राप्तों में अपना-पराया का भाव तो सदैव ही रहता आया है पर आटे में नमक की तरह तो सभी को सुहाता है पर कभी-कभी जब नमक की मात्रा बढ़ती नजर आती है तो उसकी प्रतिक्रिया हुए बिना भी नहीं रहती।

कभी-कभी तो सारी हदें पार भी देखी जाती हैं, चाहे वे अपवादस्वरूप ही हों, जब समीक्षक कहने लगते हैं कि तब आटा मुख्य था, नमक उसकी मिलावटी मात्रा ही थी जैसे रोटी आदि में होती है पर दृश्य उल्टा होकर नमक में आटा की मात्रा बन आती है तब बवंडर भी होना स्वाभाविक है। इन सम्मानों की विधिवत प्रक्रिया रहती ही है पर कई बार उसकी खानापूर्ति भी हो जाती है। कभी-कभी जब गैर समझ के लोग हावी होने लगते हैं तब चयन भी घोड़े की जगह गधे का हो जाना स्वाभाविक होता है।

यह सब तो ठीक है पर कभीकभाक ही सही, जब योग्य पात्र यूं ही जमीं में गड़े सिक्के की तरह पड़ा रह जाता है और अति चलन वाला चालबाज खनखनाता सिक्का अपना वर्चस्व दिखाने लगता है ऐसे में अफसोस होना स्वाभाविक है।

यह भी विडम्बना है कि सम्मान-पुरस्कार प्राप्ति के लिए व्यक्ति स्वयं आवेदन करे या उसका प्रिय चहेता और कोई उसके लिए प्रस्तुति दे। इन दोनों ही परिस्थितियों में कई बार कई कारणों से व्यक्ति स्वयं तो अपने लिए आवेदन करेगा ही नहीं पर संकोचवश वह दूसरों से भी अपने लिए कैसे, क्यों कहेगा?

कुछ संस्थाओं में उन्हीं की ओर से मनोनीत व्यक्ति ऐसे योग्य होनहार सुनामों को वरण करता था। कोई भी नामचीन व्यक्ति किसी का नाम सुझा देता तो उस पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाता था पर अब वह बात नहीं देखी जाती है।

प्रान्तव्यापी सम्मानों और भारतव्यापी सम्मानों में भी कभी-कभी राजनीति अधिक हिस्सा लेने लग गई है। भाईचारा, अपना-पराया तथा आपसी रिश्ते निभाने या गुप्त समझौते की चाणक्य नीति भी कहीं-कहीं उजागर होती रही है पर अब कोई किसी की सुनता नहीं, सुन भी लेता है तो बेपरवाह बना रहता है। जैसे वह नगारे का ढोल हो गया है। तब भी सम्मानों और पुरस्कारों की यह परम्परा राष्ट्र और समाज में एक नई चेतना, नई प्रेरणा और एकसूत्रता में महान राष्ट्र की प्रतीती लिये सब ओर देखी जा रही है।

जब समय ही बेरंगा-बेढंगा हो तो सारी स्थितियां-परिस्थितियां उसी चश्माई रंग में रंगी मिलेंगी।

वीआईएफटी में वर्ल्ड थियेटर डे मनाया

उदयपुर (ह.सं.)। फिल्में और थियेटर हमारे समाज का आईना है। थियेटर, फिल्म वाईस आर्टिस्ट और लेखनी में केरियर बनाने के लिए भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है। भाषा के साथ उच्चारण में निपूर्णता हो तो इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करना बहुत आसान है। यह बात प्रसिद्ध लेखक महेन्द्र मोदी ने वैंकटेश्वर इंस्टीट्युट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी एंड मास कम्युनिकेशन (वीआईएफटी) द्वारा विश्व थियेटर दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कही। महाभारत फेम अभिनेता नवीन जिनगर ने बॉलीवुड में केरियर की संभावना पर प्रकाश डाला। संघ चेयरपर्सन आशीष अग्रवाल ने बताया कि वीआईएफटी के विद्यार्थियों को भाषा, उच्चारण, अभिनय संबंधी प्रशिक्षण देने के लिए महेन्द्र मोदी और नवीन जिनगर को बुलाया गया। दोनों ने अपने क्षेत्र में केरियर और भविष्य के बारे में प्रकाश डालते हुए भाषा व उच्चारण को आज की महती आवश्यकता बताया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने सवाल-जवाब भी किये।

पोथीखाना

चौंकिये मत! जरा सोचिये

वरिष्ठ विचारक रतनचन्द जैन अपनी वैचारिक यात्रा में किसी के पिछलग्गु नहीं बन अपने ढंग से अपनी समझ पुष्ट बनाते जो लिखा उससे सहमति आवश्यक नहीं है पर कोई भी प्रबुद्ध पाठक चौंके बिना नहीं रह सकता। इसीलिए उनकी यह पुस्तक 'चौंकिये मत, जरा सोचिये' शीर्षक लिये है।

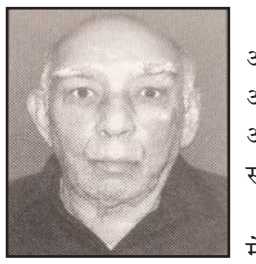

अपने तथ्यपूर्ण विचारोत्तेजक 54 आलेखों द्वारा उन्होंने पिछले रास्ते की अनेक ऐसी बातों का जिक्र किया है जिन्हें प्रामाणिक मानने के लिए किसी के सहारे की जरूरत नहीं है। कुछ का विश्लेषण देने से कोई भी उनकी बात समझ सकेगा। यथा-

(1) 'कौन रावण भक्त : कौन राम भक्त' में रावण का पैतृक गांव विसरख और मंदोदरी का पीहर जोधुपर बताते कहा गया है कि राम धरती के कण-कण और रावण जीवन के क्षण-क्षण में व्याप्त हैं।

(2) 'कब बदलेगा देश का चेहरा' में हजारों करोड़ खर्च कर पटेल की 560 फीट ऊंची प्रतिमा, भव्य मन्दिर बनाने के औचित्य पर गरीब देश के धन का सदुपयोग करने की सोच को रेखांकित किया है।

(3) 'गांधी के नाम घोटाला' में फिरोज के साथ इन्दिरा के घांघेय बनने की जगह गांधेय और फिर गांधी होकर गांधीजी के वंशज होने का राजनैतिक लाभ उठाने के लिए किये गये घोटाले की चर्चा आंख खोलने वाली है।

(4) विश्व के 119 देशों में 115 से अधिक गांधी प्रतिमाएं और भारत में अनगिनत मूर्तियों, स्मारकों और पुरस्कारों अलंकारों ने एक लंगोटी वाले फकीर को सबसे अमीर आदमी बना दिया।

(5) गांधीजी की हत्या के 10 प्रयासों में 6 तो भारत में ही हुए।

भूमिका में डॉ. धर्मचन्द जैन ने लेखक रतनचन्द जैन के लेखन में व्यापक तार्किक बुद्धिवान की छाया बताते उनके सोच में वामपंथी प्रभाव, वैचारिक उग्रता और समझौता न करने की दृढ़ स्पष्टवादिता बताते इस पुस्तक के आलेखों को विविध प्रसंगों का ज्ञानकोष बताया है।

कलासन प्रकाशन, बीकानेर से कुल 176 पृष्ठों की यह पुस्तक 250 रूपये मूल्य की है जिसे पढ़ते समय चौंकते हुए भी गहरे रूप में सोचने के लिए बाध्य होना पड़ता है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

समरसता का प्रतीक श्रीमहावीरजी का मेला

यदि आप इन दिनों दिल्ली-मुम्बई रेलमार्ग से यात्रा पर हैं तो श्रीमहावीरजी रेल्वे स्टेशन पर अपार भीड़ दिखेगी। भक्त लोग दर्शन, पर्यटन और मनौती की इच्छा से महावीरश्री के इस पवित्र लोकोत्सवीय तीर्थंकर पर यहाँ पहुंचते हैं।

राजस्थान के पूर्वांचल में करौली जिले (हिण्डौन तहसील) में पश्चिम रेलवे के दिल्ली-मुम्बई मार्ग पर स्थित श्रीमहावीरजी रेलवे स्टेशन से यह छह किलोमीटर की दूरी पर है।

यहाँ लाल, सफेद और धवल संगमरमर से निर्मित दिगम्बर जैन का एक विशाल मन्दिर दिखाई देता है जो श्रीमहावीरजी के नाम से विख्यात है। महावीर जयंती के अवसर पर यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला त्रयोदशी से वैशाख कृष्णा द्वितीय तक एक लक्खी मेला भरता है। इस बार यह 4 अप्रैल से 8 अप्रैल तक भरेगा।

गंभीर नदी के सुरम्य तट पर स्थित श्रीमहावीरजी मंदिर का पूर्व नाम चंदन गांव (चांदनपुर) था।

मीणा, गूजर, अहीर व जैनों के इस लोकतीर्थ में महावीर स्वामी के चरणचिन्ह प्रतिष्ठित हैं। चरणचिन्हों पर दुग्धाभिषेक होता है।

यह आधुनिक और प्राचीन शिल्पकला का उत्कृष्ट व बेजोड़ नमूना है। मंदिर की स्थापत्य कला तो अद्भुत है ही, स्वर्ण कलशों से युक्त उत्तंग धवल शिखर सम्यक् ज्ञान, भक्ति और दर्शन का प्रतीक है। पार्श्व प्रकोष्ठ की मुख्य वेदी में खुदाई में प्राप्त भगवान महावीर की दिगम्बर प्रतिमा है तथा दूसरी वेदी में अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। मेले का मुख्य आकर्षण होता है ध्वजारोहण और जिनेन्द्र रथयात्रा। स्वर्णिम आभा से सुशोभित रथ में भगवान की प्रतिमा होती है।

रथयात्रा के समय रथ चलाने के पहले उस चर्मकार के वंशजों का हाथ लगाने की परम्परा है, जिसे खुदाई में यह प्रतिमा मिली थी। कहते हैं, बहुत पहले चर्मकार के वंशजों के हाथ लगाए बिना अन्य लोगों ने रथ को खींचना चाहा तो रथ हिला तक नहीं। तभी से आजतक वही परम्परा कायम है।

- डॉ. कल्याणप्रसाद वर्मा

'कला समय' के 'सम्पादक शिरोमणि' श्रीवासजी से सुधि भेंट

उदयपुर। भोपाल से प्रकाशित द्वैमासिक कला संस्कृति साहित्य एवं समसामयिक परिदृश्यों की विचार प्रधान पत्रिका 'कला समय' के सम्पादक शिरोमणि प्रख्यात साहित्यकार भंवरलालजी श्रीवास ने 27 मार्च 2023 को डॉ. महेन्द्र भानावत से सुधि भेंट की।

न्यू भूपालपुरा स्थित आर्ची आर्केड नामक कॉम्प्लेक्स में नये आवास 'शब्दार्थ' में दोनों साहित्यधर्मियों में लगभग एक घण्टे तक साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की समस्याओं, चुनौतियों तथा उनसे जुड़े विद्वानों एवं पाठकों के साथ ही विविध संस्थाओं तथा सरकारों द्वारा आयोजित समारोहों, संगोष्ठियों एवं उनके द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों-सम्मानों को लेकर बेबाक बातचीत होती रही।

भंवरलाल श्रीवास तथा डॉ. महेन्द्र भानावत

समय-सन्दर्भ को देखते हुए अमुमन हर जगह इन सारे आयोजनों में मानवीय मूल्यों के क्षरण होते सन्दर्भों पर सबओर एक ही स्वर सुनाई देता है पर क्या ऐसा नहीं हो रहा है कि साहित्यिकों के कथनों में कईबार अतिरंजना के परिदृश्य भी देखने को मिलते हैं। हमारी अपनी साहित्यिक बिरादरी ही कईबार नाना समस्याओं और चुनौतियों का बतंगड़ बनाती हुई मिलती है जबकि वास्तविकता उनसे कोसों दूर होती है।

इस वैचारिक परिदृश्य में पत्रकार डॉ. तुक्तक भानावत जो हाल ही में कजाकिस्तान की यात्रा से लौटे हैं तथा शब्द रंजन की सम्पादिका रंजना भानावत भी सक्रिय बनीं।

- राजेन्द्र पालीवाल

कमलेश सेन : हेयर कटिंग के चैम्पियन

- डॉ. तुक्तक भानावत

उदयपुर के कमलेश सेन ने हेयर कटिंग के क्षेत्र में जो पहचान बनाई वह न केवल अतुलनीय है बल्कि एक आदर्श उदाहरण भी है। एकओर जहां युवा अपना जातिगत काम-धंधा छोड़ते जा रहे हैं और सुधारात्मक विचारों के बूते गोत्र-समाज से भी मुक्त होते देखे जा रहे हैं वहां कमलेशजी ने अपने समाज की समृद्ध सेवाभावी परम्परा को और अधिक पुष्ट एवं प्राणवान बनाने की दृढ़ समझ लिए जिले के छोटे से वाना गांव से निकल सेन महाराज की कृपा का प्रसाद पा उदयपुर को अपनी कर्मभूमि बनाया। उनकी कोई 15 वर्ष की उम्र रही होगी जब 1994 में यहां आये तब उनके अग्रज की 'नवरंग' नाम से हेयर कटिंग सेलून थी।

कमेलेशजी ने बताया कि पढ़ाई के दौरान सुना था कि जहां प्रबल चाह होती है वहां कुछ भी काम करने की राह आसान होती है सो मेरे मन में कुछ आगे बढ़ने और इसी काम को ऐसा कुछ बढ़िया ढंग से करने की प्रबल इच्छा थी सो मन-ही-मन उसके लिए बेहतर सोच लिए लगा रहा। भगत सेनजी महाराज की कृपा का ही यह फल रहा कि सन् 2000 में ही 'नवरंग' की बजाय एक रंग और बढ़ाकर 'चैम्पियन' नाम से दुकान प्रारम्भ की जो एक-के-बाद-एक होकर वर्तमान में उदयपुर के विभिन्न हिस्सों में 'दसरंग' (दुकानें) कार्यरत हैं।

इस उपलब्धि की आप क्या खासियत मानते हैं? पूछने पर कमलेशजी बोले, ''खासियत यह है कि मेरे परिवारवाले सभी मिलकर काम कर रहे हैं। 19 तो फेमेली मेम्बर ही हैं जो एकमन, एकप्राण लिए हैं।

इससे सबसे बड़ा संतोष तो यही है कि परिवार एकसूत्र में बंधा हुआ है। आपसी सौहार्द है और 'जब आवे संतोष धन, सब-धन धूलि समान' वाली कहावत चरितार्थ हुई है। यत्किंचित भी भेदभाव न रहे इसलिए सभी दुकानों का नाम 'चैम्पियन' है। और-तो-और मैंने तो अपने पुत्र का नाम भी 'चैम्पियन' रख दिया।''

मैंने कहा, 'चैम्पियन नाम यों भी अनेक क्षेत्रों में व्यावहारिक बन गया है। श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला 'चैम्पियन' सबकी जबान पर चढ़ा मिलता है। खासकर खेल जगत में अच्छे खिलाड़ी के लिए यह शब्द प्रेरणा का भी सूचक है।'

इस पर कमलेशजी बोले, '' यही नहीं, हमारी दुकानों पर कुल 190 व्यक्ति कामपर लगेहुए हैं। योग्यता के अनुसार सभी का वेतन बांध रखा है जो हर माह उनको दे दिया जाता है। व्यवस्था ऐसी कर रखी है कि सभी अपने को पार्टनर समझें। मालिक होने का भाव हमने शुरू से ही नहीं रखा।

इसके अलावा काम करनेवाले सभी अपने हूनर में प्रशिक्षित किये जाते हैं। उन्हें हर नई टेक्नीक से परिचित कराया जाता है। स्वच्छता का तथा समयबद्ध काम पूरा करने का ध्यान रखा जाता है। कटिंग कराने वाला जिस भावना और भरोसा लिए आता है वह उसकी उम्मीद से सवाया संतुष्ट हो और दूसरी बार वह अकेला ही नहीं, अपने साथी को भी साथ लाये, इसी में हमारी सफलता मानते हैं। अपनी पेट भराई तो जानवर भी कर लेता है। बहरहाल, हर आने वाले के स्वागत के लिए रिसेप्सनिस्ट है।''

आपने संतोष, संतुष्टि और सफलता की बात कही। इसी से जुड़ा सवाल है कि जो भी कटिंग कराने आता है वह एक ही तरह की कटिंग चाहने वाला नहीं होता, अपने मन के माफिक कटिंग होने पर ही संतुष्ट होता है। इस बाबत आप क्या कहना चाहेंगे? इस सवाल पर उनका उत्तर था-

''मुख्य बात ही यही है। हर व्यक्ति अपने मन-रंग की कटिंग चाहता है। हम चेहरा देखकर ही अन्दाजा लगा लेते हैं कि किस व्यक्ति पर किस स्टाइल की कटिंग सुन्दर लगेगी फिर अधिकांश तो बिना हमारे कुछ बोले, कुर्सी पर बैठते ही बता देते हैं कि उसे किस तरह की कटिंग चाहिए। जैसे कि कान के ऊपर तक या आधे कान को ढकते हुए या कि कान के नीचे तक लटके बाल हों। पीछे के बाल बिल्कुल चकरी भांत हों या कि धनुषाकृति लिये हों। हमारी निगाहें भी भिन्न-भिन्न चेहरे देख परिपक्व हो जाती हैं फिर हमारे पास कुछ एलबम भी विभिन्न प्रकार की कटिंगों वाले चेहरों की रहती है सो ग्राहक को पूरी संतुष्टि हो जाती है और भरोसे के साथ हम उनका विश्वास जीतने में भी कामयाब हो जाते हैं।''

कमलेश सेन तथा डॉ. महेन्द्र भानावत

इस दौरान मेरे पापा डॉ. महेन्द्र भानावत भी आ गये। कमलेशजी ने आत्मीय अभिवादन करते खुशी प्रकट की। बोले, ''नाम तो वर्षों से सुनता आ रहा हूं पर तुक्तकजी ने आज यह सुयोग बना दिया।'' पापा बोले, जब सन् 1958 में मैं यहां आया था तब 'अति सुन्दर हेयर कटिंग' नाम से एक दुकान बड़ी प्रसिद्ध थी। बाद में पंचवटी में नैन बावरा से हमारी मुलाकाल हुई। वे फिल्मी कलाकारों की तरह ही सुडौल काया लिये थे और शेरो शायरी करते, किस्सों पर किस्से सुनाते कटिंग करने में कमाल हांसिल थे। उनके बाद अब तो मैं दो-चार महीने में घर पर ही बहू रंजना या फिर पोते अर्थांक से कटिंग करवा लेता हूं।''

यह सुन कमलेशजी बोले, ''आपके चेहरे के अनुरूप ही नहीं, आपके लेखक-कलाकार होने का पुख्ता नजरिया भी आपके बालों की कटिंग मुंह बोलती है।'' इस बीच रंजना ने भी जो ब्यूटी पार्लर के सिद्धान्तों के अनुसार अपने को संवारे रखती है, कुछ सवाल और कलर करने के बारे में कुछ जिज्ञासा रखी और उत्तर पाकर संतुष्ट हुई।

मैंने बालों में कलरिंग को लेकर कुछ सवाल भी पूछे हालांकि कुछ वर्षों से मैं कमलेशजी से ही अपनी मनभावन कटिंग और कलरिंग करवाता आ रहा हूं। कमलेशजी ने बताया कि कलर का इन्टरनेशनल फोरमेट बना हुआ है।

बालों के अनुरूप अनेक शेड्स आते हैं। उसी के अनुसार हम बालों का कलरिंग करते हैं। यदि कोई शैम्पू झाग देता है तो समझ लीजिये वह कलर मिक्स है जो हानिकारक है। मेहंदी कलर भी यदि ब्लेक रंग दे रहा है तो उसमें भी मिक्स है। कोई प्रोब्लेम हो तो डाक्टर के पास जाना चाहिये। उम्र के अनुसार भी बालों का रंग बदलता है अत: उनमें किये जाने वाले कलर के शेड भी बदलने होते हैं।

अन्तिम सवाल में कमलेशजी ने बताया कि हमारी दस दुकानों में से एक स्वतंत्र रूप से महिलाओं के लिए और एक मात्र बच्चों की कटिंग के लिए है। बच्चों का पूरा मन बहलाव हो सके इसलिए उसी तरह का वातावरण उन्हें सुलभ कराया जाता है। कटिंग के समय बच्चे रोने न लगें उसका भी पूरा ख्याल रखा जाता है। उनके अनुकूल दृश्य-चित्र तथा संगीत-श्रवण की बेहतरीन व्यवस्था और सजावट का ध्यान रखा गया है। कुल मिलाकर हमारा लक्ष्य हमारी संतुष्टि ही नहीं, उससे भी सर्वोपरि संतुष्टि आनेवाले यजमान को सर्वरूपेण संतुष्टि देने का है। इसमें हम कहां तक खरे हैं, इसका पैमाना हमारे पास नहीं, आने वालों के पास है। आप भी कभी आयेंगे, 'अवश्य', तो हमारा 'अहोभाग्य' भी संतुष्ट होगा।

भारत लिपियों का अजायबघर

- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

भारत अनेक लिपियों का अजायबघर रहा है। यहां अलग-अलग काल में अलग-अलग लिखावट रही है। इसमें भी क्षेत्रीयता के हिसाब से लिपियां बदलती ही रही हैं, मगर जिसको ब्राह्मी नाम दिया गया, वह लिपि बहुत प्राचीन है। विश्वास किया जाता है कि अशोक के शिलालेखों में इसी का प्रयोग हुआ है, हालांकि कुछ लेखों में प्रयुक्त लिपि का नाम खरोष्ट्री भी दिया गया है। अशोक ने लिपि को धम्म लिपि कहा है। गुप्तकाल के जाते-जाते अशोक के काल की लिपि का पठन-पाठन बंद हो गया तो लोग वैसे ही भूल गए जैसे कि अब होने वाले बच्चे एक पैसा, पांच पैसा, चवन्नी आदि को नहीं जान पाएंगे या हाथ के लिखे दादाजी के पत्र भी नहीं पढ़ पाएंगे।

फिरोजशाह तुगलक ने अपनी एक यात्रा के दौरान एक स्तंभ पर लिखे अक्षर देखे तो आश्चर्य किया कि इनमें क्या लिखा है? वह स्तंभ को दिल्ली ले आया और मुनादी पिटवाई कि कौन है जो इन अक्षरों को पढ़ेगा? जैसा कि होता है, पंडित रास्ता निकाल ही लेते हैं, बहुत प्रयास के बाद में कोई पंडित उनको पढ़ नहीं पाया तो युक्ति निकाली गई - ये अक्षर देवताओं के हैं और इनको पढ़ने की कुंजी देवगण अपने साथ ही अपने लोक को ले गए हैं...।

फिरोजशाह की बात 'तारीख ए फिरोजशाही' में ही रह गई मगर इस ओर ध्यान गया जेम्स प्रिंसेप का, जो 19वीं सदी के प्रारंभ में भारत आया था। वर्ष 1799 ईस्वी के अगस्त की 20 तारीख को जन्मे प्रिंसेप का निधन 22 अप्रैल 1840 को हुआ। वह एशियाटिक सोसायटी, कोलकाता का सदस्य और सचिव रहा। ऊंट, हाथी आदि पर यात्राएं करते हुए उसने देश के पुरास्थलों को देखने में रुचि ली और बौद्ध स्मारकों को खोजा क्योंकि अधिक संख्या में थे और अपेक्षाकृत पुराने भी।

समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति से लेकर अन्यत्र जहां कहीं अशोक के शिलालेख थे, उसने खोजा और बहुत परिश्रम के साथ उक्त ब्राह्मी लिपि को पढ़ने की युक्ति खोजी।

उसने कई लेख लिखे और पाली, प्राकृत सहित अन्य भाषाओं की प्राचीन लिपियों को पढ़ने के लिए वर्णमालाएं तैयार कीं, हालांकि बाद में इसमें कोलकाता संस्कृत पाठशाला (1818 ई.) के संस्थापक प्रो. एच. एच. विल्सन ने भी बड़ा योगदान किया। हालांकि उसके लिए फिर कभी ऐसा नहीं लिखा गया कि वह देवलोक जाकर अक्षर पठन की कुंजी ले आया है! लेकिन, लम्बे समय तक उसके पढ़े लेखों से अलगाव रखा गया...।

प्रिंसेप के लिखे लेखों का संग्रह 1858 ई. में जोन मूर ने लंदन से दो भागों में प्रकाशित करवाया। नाम है - एस्सेज़ ऑन इंडियन एंटिक्विटीज (हिस्टोरिक, न्यूमिस्मेटिक एंड पिलियोग्राफिक)। इसका संपादन एडवर्ड थॉमस ने किया था जो बंगाल सिविल सेवा में रहे। (मेरा संकल्प है कि इसका अनुवाद, संपादन करवा कर प्रकाशित करवाऊं)।

प्रिंसेप के इस योगदान को शिलालेखों का बडा संग्रह तैयार करने वाले जॉन फेथफुल फलीट ने लिखा है कि 1837 में जर्नल आव द बंगाल एशियाटिक सोसायटी के जिल्द 6 पृष्ठ 663 पर भारतीय पुरातात्विक अध्ययन को सबसे पहले एक दृढ और समीक्षात्मक आधार पर प्रतिष्ठित करने वाले विद्वान जेम्स प्रिंसेप ने दिन प्रतिदिन भारी मात्रा में प्रकाश में आते हुए अभिलेखिय साक्ष्यों को सुव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत करने की आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाया। उन्होंने ही सुझाव दिया कि इन्हें एक साथ ग्रंथ रूप में प्रकाशित किया जाए और इसका नाम 'कार्पस इंस्क्रिप्शन इंडिकेरम' रखा जाए। (कार्पस इंस्क्रिप्शन इंडिकेरम भाग तीन, प्राक्कथन)। बाद में यह काम 1877 ई. में भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम ने आरंभ किया...। और इसी को फलीट, ब्यूहलर आदि ने आगे बढ़ाया मगर प्रिंसेप का योगदान अमर हो गया, इसलिए कि उसकी बदौलत हमने भूली-बिसरी लिपियों को पढ़ना सीखा और अपने अतीत पर गौरव करना भी जाना।

यह वह अपूर्व कदम था कि जिसके बाद, सुमेरियाई, मिस्री, हम्मूरावी जैसी लिपियों को पढ़ने और रहस्यों को खोलने के मानवीय संकल्प पूरे हुए.. मगर, हम ये नहीं जानते कि इनके मूल में भारतीय विद्वान भी थे, वे कौन थे, हमें इसकी जानकारी होनी चाहिए और इसके लिए प्रिंसेप का लेखन पढ़ना चाहिए।

बाजार / समाचार

रेगलिया गोल्ड क्रेडिट कार्ड लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने रेगलिया गोल्ड क्रेडिट कार्ड के लॉन्च की घोषणा की। यह एक सुपर-प्रीमियम क्रेडिट कार्ड है जिसमें अद्वितीय विशेषताएं और क्रेडिट कार्ड की रेगेलिया रेंज में लाभ हैं। कार्ड बेस्ट-इन-क्लास ट्रैवल एंड लाइफ़स्टाइल लाभों से भरा हुआ है, जिससे ग्राहक वैश्विक यात्रा के लिए और विशेष रेगेलिया गोल्ड कैटलॉग के माध्यम से प्रीमियम ब्रांडों के संग्रह पर पुरस्कार भुना सकते हैं।

पराग राव, ग्रुप हेड - पेमेंट कंज्यूमर फाइनेंस, डिजिटल बैंकिंग एंड इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी ने कहा कि यह कार्डधारकों को विश्वस्तर पर कंपलीमेंट्री एयरपोर्ट लाउंज एक्सेस और प्रीमियम माइलस्टोन का लाभ भी प्रदान करता है। रेगलिया गोल्ड 'सुपर प्रीमियम कैटेगरी' में एचडीएफसी बैंक का नवीनतम प्रयास है। क्रेडिट कार्ड उच्च आय वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध होगा और विशेष रूप से यात्रियों और जीवन शैली के प्रति उत्साही लोगों की जरूरतों और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। रेगलिया गोल्ड कई विशेष प्रस्तावों और लाभों के साथ-साथ वैश्विक यात्रा सुविधा प्रदाताओं, हवाईअड्डा लाउंज और लाइफस्टाइल ब्रांडों पर क्यूरेट किए गए लाभों के साथ वन स्टॉप समाधान प्रदान करता है।

भारत रिकॉर्ड सरसों का उत्पादन करेगा : एसईए

उदयपुर (ह. सं.)। भारत में 2022-23 में रिकॉर्ड 115.25 लाख टन रेपसीड-सरसों की फसल उत्पादन का अनुमान है, क्योंकि इसके पीछे पिछले साल लाभकारी कीमतों ने तिलहन के रिकॉर्ड बुवाई को प्रोत्साहित किया। सरसों उगाने वाले राज्यों के अधिकांश हिस्सों में अनुकूल मौसम ने भी अब तक के सबसे अधिक उत्पादन में मदद की है। यह निष्कर्ष सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया द्वारा किए गए फसल सर्वेक्षण से सामने आया है।

पिछले कुछ वर्षों में, भारत दुनिया के सबसे बड़े खाद्य तेल आयातक के रूप में उभरा है, जिससे इसके खजाने के साथ ही किसानों की आय पर भी गहरा असर पड़ा है। एक जिम्मेदार और सर्वोच्च उद्योग निकाय के रूप में, एसईए ने तिलहन की घरेलू उपलब्धता बढ़ाने के लिए कई पहल शुरू की हैं। वर्ष 2025-26 तक भारत के रेपसीड-मस्टर्ड के उत्पादन को 200 लाख टन तक बढ़ाने की दृष्टि से 'मॉडल मस्टर्ड फार्म प्रोजेक्ट' नाम की इन पहलों में से एक को लागू किया जा रहा है। प्रोजेक्ट ने सकारात्मक परिणाम दिखाना शुरू कर दिया है, जैसा कि 2022-23 फसल वर्ष के लिए हालिया फसल सर्वेक्षण में पता चलता है।

दो अध्ययन अंतर्राष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित

उदयपुर (ह. सं.)। प्राणघातक माने जाने वाले गाइनेक कैंसर और बॉवेल (आँत) एंडोमेट्रियोसिस के उपचार के लिए अहमदाबाद के एक डॉक्टर ने नई तकनीकों को विकसित किया है, जिसे एक प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित किया गया है। इन उन्नत तकनीकों को डॉ. दीपक लिंबाचिया और उनकी टीम द्वारा विकसित किया गया है, जो एक जाने-माने लेप्रोस्कोपिक और ऑन्कोलॉजी सर्जन तथा ईवा वुमन हॉस्पीटल और एंडोस्कोपी सेंटर के संस्थापक भी हैं। डॉ. दीपक लिंबाचिया ने अंतर्राष्ट्रीय कैंसर दिशानिर्देशों के अनुसार उचित और संपूर्ण लेप्रोस्कोपिक सर्जिकल मैनेजमेन्ट के साथ स्त्री रोग के कैंसर के क्षेत्र में विस्तृत और व्यापक स्तर पर काम किया है। अध्ययन 'बाउल एंडोमेट्रियोसिस मैनेजमेंट बाय कोलोरेक्टल रिसेक्शन, लैप्रोस्कोपिक सर्जिकल टेकनीक एंड आउटकम' दुनिया में अपनी तरह का पहला अध्ययन है, जो एक अंतर्राष्ट्रीय अमेरिकी जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

ऑन्कोलॉजी पेपर -भारतीय महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर सबसे आमजनन-संबंधी कैंसर है। पश्चिमी दुनिया में महिलाओं में एंडोमेट्रियल कैंसर सबसे आम यौनजनन संबंधी कैंसर है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2020 में 6,04,127 महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर हुआ और वैश्विक स्तर पर इस बीमारी से 3,41,831 महिलाओं की मौत हुई थी। भारत के लिए ग्लोबोकेन-2020 के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2020 में सर्विक्स कार्सिनोमा के 1,23,907 मामले दर्ज किए गए थे। वर्ष 2019 में भारत में सर्वाइकल कैंसर के कारण 45,300 महिलाओं की मौते हुई थी।

मेवाड़ महोत्सव के दौरान चार दिवसीय गणगौर मेला 24 से 27 मार्च तक गणगौर घाट पर आयोजित हुआ। इसमें विभिन्न समाजों की महिलाएं गणगौरें लेकर घाट पर आईं और ज्वारा विसर्जन किया।

फोटो : राजेन्द्र हिलोरिया

- जेके पेपर कंपनी दोहराएगी पर्यावरण संरक्षण का संकल्प-
कंपनी ने लिया 13 करोड़ वृक्षारोपण का संकल्प
- कंपनी प्रेसिडेंट का आह्वान, पर्यावरण हो हमारी प्राथमिकता

कजाकिस्तान के अल्माटी में जे.के पेपर कंपनी लिमिटेड की ओर से आयोजित ट्रेड पार्टनर्स मीट में कंपनी ने एक बार फिर पर्यावरण संकल्प को दोहराते हुए 13 करोड़ नए वृक्ष लागने का संकल्प किया है।

कंपनी के वाइस चेयरमैन और एम.डी हर्षपति सिंघानिया ने कहा कि वैश्विक मंदी, युक्रेन युद्ध, कोविड सहित अन्य चुनोतियों के बीच कंपनी ने काफी संघर्ष किया है। बावजूद इसके 2021 में हमारी कुल खपत 415 मिलिटन टन पहुंची, जो 2019-20 की तुलना में 18 फीसदी अधिक रही। वर्तमान में हम ग्लोबल लेवल पर 9 फीसदी की बढ़त के साथ हैं। इसमें भारत हमारा सबसे बेस्ट परफॉर्मर रहा है। डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन के इस दौर में सभी सेगमेंट में गिरावट का दौर तो चल रहा है मगर तकनीक के नए दौर में नई संभावनाओं का भी उदय हुआ है। सेगमेंट व ट्रेंड्स के अनुसार हम अपने फुटप्रिंट्स को ग्लोबल लेवल तक लगातार बढ़ा रहे हैं। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने ग्रोथ के आंकड़े पेश कर आने वाले दौर की चुनौतियों को रखा। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक रिप्लेसमेंट क्लाइमेट चेंज, डी कार्बनाइजेशन, पल्प की ऊची दरों, नेट जीरो सहित वैश्विक सस्टेनेबल गोल आदि को ध्यान में रखते हुए बिजनेस ट्रांसफॉर्मेशन पर ध्यान देना है।

कंपनी के प्रेसिडेंट और डायरेक्टर ए. एस. मेहता ने बताया कि वर्तमान में 55,000 एकड़ पर पौधरोपण जारी है, जबकि अगला लक्ष्य 70,000 एकड़ पर पौधरोपण होगा। इस तरह वर्ष में कुल 13 करोड़ वृक्षारोपण किया जाएगा। कॉन्फ्रेंस में शामिल हुए देश के चुनिंदा 250 प्रतिनिधियों ने कंपनी के इस संकल्प को धरातल पर लाने में सहमति प्रदान की है।

'विनिंग इन अनसरटेन टाईम' थीम पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में जेके पेपर के मार्केटिंग हेड देवाशीश गांगुली ने कहा कि वर्तमान में रशिया

से वेस्ट तथा चाइना से ईस्ट तक हमारी ग्राहक श्रृंखला मौजूद है। अब साउथ इस्ट में भी कंपनी ने बढ़त ली है। 2019 में गोवा में हुए कॉन्फ्रेंस के बाद काफी बदलाव महसूस किया गया है। उम्मीद है कि अल्माटी में हुई इस कॉन्फ्रेंस जो संकल्प और प्रकल्प लिए गए हैं उस पर हम होलसेलर्स और डीलर्स के सहयोग से खरा उतरेंगे।

कंपनी के प्रेसिडेंट और डायरेक्टर ए.एस मेहता ने ब्रह्मा, विष्णु-महेश की त्रिवेणी को नए संदर्भों में परिभाषित करते हुए नए डिजिटल संदर्भों में उसे अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि डिजिटल ट्रांसफोर्मेशन के लिए हमें लगातार सीखना होगा। सीखेंगे नहीं तो आगे कैसे बढ़ेंगे। हमें हमने जीवन पर्यन्त स्टूडेंट बनकर सीखते जाना है। कभी परिवार के लिए, कभी हमारी फिजिक तो कभी हमारे बिजनेस के लिए तो कभी सोसायटी के लिए सीखना होगा। हमें फ्यूचर रेड्डी होना होगा। हमें सोसायटी के लिए रेलवेंट बने रहना है। जो समय के साथ नहीं बदला वो सोसायटी में भुला दिया गया, इरेलेवेंट हो गया। हमें कुछ चीजों को भूलना है, कुछ को भुलाना है व कुछ चीजों को नया सीखना है। ब्रह्मा सृष्टि के रचियता है मगर उनको कितने लोग जानते हैं, हिन्दुस्तान में जहां तक मेरी जानकारी है एक ही मंदिर है। लोग क्रिएटर को याद नहीं करते। सृष्टि के पालनकर्ता विष्णुजी के अवतारों को याद करते हैं। सबसे ज्यादा मंदिर शिवजी के क्यों हैं? क्योंकि उनसे हम भयभीत होते हैं। उनके पास तीसरे नेत्र की शक्ति है। मेरा मानना है कि किसी भी डिस्ट्रक्शन के बिना री-क्रिएशन नहीं बन सकता। अगर इस सृष्टि की रचना व संहार भी नई सृष्टि की रचना में होता है तो डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन शब्द भी बिजनेस मॉडल व थिंकिंग प्रोसेसर को री-इन्वेंट करने जैसा ही है। इस प्रोसेस में हमें ट्रेडिशनल व इरेलेवेंट बिजनेस मॉडल को ध्वस्त करके अपेक्षाकृत बेहतर व भविष्योनमुखी नया मॉडल बनाना है। उन्होंने कहा कि किसी ने भविष्य नहीं देखा है, लेकिन सब इन पर अनुमान और कयास लगाते हैं। कंपनी की पॉलिसी इस संबंध में थोड़ी अलग है, हम भी कई मामलों में अनुमान लगाते हैं, उनका आधार हायपोथिसिस होता है इसमें कस्टमर की डिमांड और रेग्यूलेट्री बोर्ड की सप्लाई का तालमेल होता है।

इस अवसर पर जेके पेपर कंपनी लिमिटेड के मार्केटिंग व सेल्स चीफ पार्थ बिश्वास, सीनियर जनरल मैनेजर पेकेजिंग बोर्ड मनोज अग्रवाल, आईटी विभाग के सुबेंदू केश, सीपीएम के प्लांट हेड मुकुल वर्मा, मेनिफेक्चरिंग हेड पीयूष मित्तल ने कागज उद्योग पर विचार रखे। कांफ्रेंस में 250 होलसेलर्स-डीलर्स ने प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं को शांत किया। धन्यवाद विजय गंभीरे ने दिया।

- कजाकिस्तान से
डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा प्रेषित

सरसों मॉडेल फार्म प्रोजेक्ट की महत्वपूर्ण भूमिका

उदयपुर (ह. सं.)। वर्ष 2025 तक सरसों का उत्पादन 200 लाख टन तक बढ़ाने और तिलहन उत्पादन में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से देश के शीर्ष खाद्य तेल उद्योगनिकाय द सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया एवं सॉलिडेरिडाड संस्था द्वारा सरसो मॉडल फार्म प्रोजेक्ट का क्रियान्वयन किया जा रहा है। सरसों उत्पादन से संबंधित प्राप्त प्रारंभिक आंकड़ों के अनुसार, प्रोजेक्ट क्रियान्वयन क्षेत्र में सरसों के उत्पादन में वृद्धि अनुमानित है। परियोजना के तहत मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और पंजाब में अभी तक 2100 से अधिक मॉडल फार्म विकसित किए गए है, जिससे 73500 से अधिक किसान लाभान्वित हुए हैं। प्रोजेक्ट क्रियान्वयन क्षेत्रों में किसानों द्वारा व्यापक रूप में कृषि के वैज्ञानिक तरीके और उन्नत तकनीकों को अपनाया गया है, जिससे उत्पादन में वृद्धि संभव हो सकी है।

भारत विश्व में खाद्य तेलों के सबसे बड़े आयातकर्ता के रूप में सामने आया है। खाद्य तेलों की घरेलू खपत लगभग 240 लाख टन है। बढ़ती जनसंख्या और प्रति व्यक्ति आय के साथ खाद्य तेलों की खपत और बढ़ने की संभावना है। वर्तमान में,भारत में लगभग 100 लाख टन खाद्य तेल का उत्पादन हो रहा है। खाद्य तेलों की मांग और आपूर्ति के बीच का अंतर लगभग 140 लाख टन है और इस अंतर को आयात के द्वारा पूरा किया जारहा है। आयात किए जा रहे खाद्य तेल पर देश की निर्भरता चिंता का विषय है और इस चुनौती से निपटने के लिए भारत को तिलहन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के तरीकों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। भारत में, लगभग एक तिहाई खाद्य तेल की आपूर्ति तोरिया और सरसों से होती है, जो इन्हें देश की प्रमुख खाद्य तिलहन फसल बनाता है। खाद्य तेल के आयात पर निर्भरता कम करने के लिए सरसों सबसे महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। साथ ही कम लागत और कम सिंचाई में यह फसल अधिक उत्पादन भी देती है।

उदयपुर में आईटीसी ममेंटोज़ का शुभारंभ

उदयपुर (ह. सं.)। आईटीसी के होटल ग्रुप ने अपनी पहली ममेंटोज़ बाय आईटीसी होटल्स, इकाया उदयपुर प्रॉपर्टी के नए ब्रांड ममेंटोज़ का एकलिंगजी के समीप 28 मार्च को शुभारंभ किया।

अनिल चड्ढा, डिविजनल चीफ एक्सिक्यूटिव, आईटीसी होटल्स ने बताया कि नाथद्वारा और एकलिंगजी मंदिर के समीप, उदयपुर एयरपोर्ट से करीब 40 मिनिट व शहर से मात्र 20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित ममेंटोज़ उदयपुर लगभग 50 एकड़ से भी अधिक के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। यह रिसॉर्ट शांति और आरामदायक निजता से भरपूर जगह है। रिसोर्ट में क्लस्टर विला हैं जिनकी कुल 117 चाबियाँ हैं।

प्रत्येक विला भव्यता लिए है। यहां एक्सक्लूसिव पूल व बारबेक्यूव प्राइवेट पार्टीज के लिए एक पर्सनल डेक भी उपलब्ध है। ममेंटोज़ उदयपुर में विविध प्रकार की मीटिंग्स, बैंकवेट्स व अन्य आयोजन करने का पूरा इंतज़ाम है। इसके लिए 1 लाख स्क्वेयर फीट से भी अधिक के कुल क्षेत्र यहां मौजूद हैं। इसमें शानदार पिलर लेस (खम्बेरहित) स्टेट रूम, आलीशान प्रीफंक्शन एरिया तथा विशाल फैले हुए लॉन शामिल है।

हमारे लक्ज़री होटल्स सेगमेंट में ममेंटोज़ ब्रांड के शामिल होने से, आईटीसी होटल्स के लक्ज़री पोर्टफोलियो को और मजबूती मिली है। भारत मे आईटीसी होटल्स की आइकॉनिक प्रॉपर्टीज की विरासत पर निर्मित, ममेंटोज़ उदयपुर, राजस्थान की समृद्ध धरोहर, भव्यता

और जोश से भरपूर धरोहर के प्रति हमारी एक सौगात है। हमें विश्वास है कि यह विश्वस्तरीय प्रॉपर्टी, राजस्थान के वाइब्रें टटूरिज्म लैंडस्केप में अर्थपूर्ण योगदान प्रदान करेगी।

ममेंटोज़ आईटीसी होटल्स, इकाया उदयपुर के विजेंद्र सिंह चौधरी ने बताया कि इस यादगार क्षण के अवसर पर आईटीसी होटल्स के ममेंटोज़ ब्रांड के अंतर्गत इस क्षेत्र की पहली प्रॉपर्टी के रूप में पहचान पाकर हम सभी बेहद रोमांचित हैं।

यह ब्रांड जो कि उदयपुर में भारतीय राजसी ठाठ बाट और लक्ज़री का परिचायक है। मुझे पूरा विश्वास है कि आईटीसी होटल्स के साथ, आतिथ्य के इस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखने व इस लैंडमार्क प्रोडक्ट (विशिष्ट उत्पाद) यानी ममेंटोज़, उदयपुर की सेवाएं प्रदान करने का हमारा सशक्त और उत्कृष्ट तरीका, मिलकर उदयपुर में पर्यटन की संभावनाओं को और बढ़ाएगा।

विशाल विस्तार में फैली ममेंटोज़ उदयपुर प्रॉपर्टी इस क्षेत्र के लाजवाब स्वाद के जरिये यहां की परम्परा और संस्कृति का प्रतीक बनती है। स्वाद की इस पेशकश में हेरिटेज क्विज़ीन 'कबाब्स एंड करीज़' शामिल है जो कि पुरस्कार प्राप्त उत्तर पश्चिमी फ्रंटियर क्विज़ीन है और जिसे आईटीसी होटल्स के प्रतिष्ठित, कुशल व दक्ष शेफ्स द्वारा वर्षों की रिसर्च के बाद परोसा गया है।

ममेंटोज़ उदयपुर इस के अलावा भारत के लक्ज़री वेजिटेरियन क्विज़ीन के लज्जतदार फ्लेवर्स प्रस्तुत करने वाले रॉयलवेगा, की भी पेशकश करता है। वहीं उदयपुर शहर से प्रेरित उदय पैवेलियन भी यहां मौजूद है जो कि एक ऑल डे डाइनिंग और अलाकार्टे रेस्त्रां है जो भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय स्वादों की विस्तृत श्रृंखला प्रस्तुत करता है।

यहां का अरावली लाउंज, एक बुटीकटी लाउंज है जो बेहतरीन चाय की चुस्कियों के साथ अरावली की अविस्मरणीय और लुभावनी के दीदार भी करवाता है। वहीं लक्ज़री बार, रॉक बार मेहमानों के लिए एक्साइटिंग कॉकटेल्स आदि की विस्तृत श्रृंखला पेश करता है।

ममेंटोज़ उदयपुर में सस्टेनेबिलिटी अभियानों की श्रृंखला भी चलाई गई है जिसमें वर्षा जलसंग्रहण, रिसाइकिलिंग वॉटर, उच्च रिसाइकिलिंग कॉन्टेंट के साथ निर्माण सामग्री का उपयोग व एयरकंडीशनिंग, रेफ्रिजरेशन व वॉटर पम्पिंग आदि में एनर्जी एफिशिएंट सिस्टम्स का उपयोग जैसे महत्वपूर्ण फंक्शन आदि सक्रिय रूप से शामिल किए गए हैं जो ममेंटोज़ उदयपुर के मेहमानों के लिए प्रकृति के साथ जुड़ते हुए बेजोड़ लक्ज़री हॉस्पिटैलिटी की पेशकश करते हैं।

पांच प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रोशन

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर जिले में सिग्निफाई कंपनी द्वारा चलाए जा रहे स्वास्थ्य किरण सीएसआर कार्यक्रम के तहत जिले में पांच प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी) को रोशन किया है। इस कार्यक्रम के तहत गोगुन्दा के पड़ावली व सायरा पीएचसी, कोटड़ा के मालवा का चौरा व मामेर पीएचसी तथा झाड़ोल के पानरवा में यह सौगात मिली है। परियोजना का उद्घाटन जिला कलक्टर ताराचंद मीणा ने पानरवा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से किया। इस दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. शंकर बामनिया भी साथ थे।

फिनिश सोसायटी के साथ साझेदारी में निष्पादित इस परियोजना से इन स्वास्थ्य केन्द्रों को स्थायी, प्रदूषण-रहित और विश्वसनीय ऊर्जा मिलेगी और जिले के एक लाख से ज्यादा लोगों की स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित होगी। उन्होंने सिग्निफाई और फिनिश सोसायटी के प्रयासों को सराहा और सामाजिक दायित्व के तहत किये जा रहे जनोपयोगी कार्यों को अनुकरणीय बताया।

सिग्निफाई इनोवेशंस इंडिया लि. की सीएसआर प्रमुख नताशा वाधवा ने कहा कि हर एक स्वास्थ्य केन्द्र में ऊर्जा से सक्षम लाइट्स के साथ 2.5 केडब्ल्यू के एक सौर ऊर्जा विद्युत संयंत्र की स्थापना इस परियोजना में शामिल है।

फिनिश सोसायटी के सदस्य सचिव अभिजीत बैनर्जी ने कहा कि सिग्निफाई के साथ जुडक़र समाज की भलाई के लिये काम जारी रखना हमारा सौभाग्य है। स्वास्थ्य किरण कार्यक्रम के दूसरे चरण में हम उदयपुर के उन नागरिकों को अच्छी गुणवत्ता की चिकित्सा सेवाएं देने के लिये इस कंपनी के साथ साझेदारी करके खुश हैं, जिन्हें अब बिजली आपूर्ति की बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा और सिग्निफाई द्वारा स्थापित सौर विद्युत संयंत्र के कारण उनका खर्च और ऊर्जा भी बचेगी।

प्रदेश को दुनिया के तीसरे एवं देश के दूसरे सबसे बड़े क्रिकेट स्टेडियम की सौगात

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान दिवस पर प्रदेश को एक बड़ी सौगात देते हुए चैंप जिला

जयपुर में निर्माणाधीन क्रिकेट स्टेडियम हेतु राजस्थान क्रिकेट संघ और वेदांता की हिन्दुस्तान जिंक लि. के बीच एमओयू हुआ है। इसके तहत वेदांता की हिन्दुस्तान जिंक लि. राजस्थान क्रिकेट संघ को 300 करोड़ रूपये देगा। अब यह स्टेडियम 'अनिल अग्रवाल अन्तर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम, जयपुर' के नाम से जाना जायेगा। एमओयू पर राजस्थान क्रिकेट संघ के सचिव भवानीशंकर सामोता एवं हिन्दुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने हस्ताक्षर किये।

राजस्थान क्रिकेट संघ के मुख्य संरक्षक एवं राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा कि इस स्टेडियम के बनने से उनका बरसों पुराना सपना साकार होगा एवं राजस्थान को विश्वस्तरीय क्रिकेट सुविधाएं मिलने की शुरूआत होगी है। उन्होंने हिन्दुस्तान जिंक का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वेदांता का सहयोग ना केवल पहले चरण में अपितु स्टेडियम निर्माण के द्वितीय चरण के साथ-साथ राजस्थान में क्रिकेट व अन्य खेलो को बढ़ावा देने के लिए भी जारी रहेगा।

राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष वैभव गहलोत ने कहा कि नये स्टेडियम के निर्माण से अन्तर्राष्ट्रीय सुविधाओं के साथ बेहतरीन स्टेडियम उपलब्ध हो सकेगा। स्टेडियम निर्माण के पहले चरण में 40,000 दर्शकों के बैठने की सुविधा प्राप्त होगी जिसे बाद में बढ़ाकर 75,000 किया जायेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री को धन्यवाद देते कहा कि राज्य सरकार द्वारा 100 एकड़ भूमि रियायती दरों पर आरसीए को आवंटित की गयी है जिस पर इस भव्य स्टेडियम का निर्माण किया जा रहा है।

हिन्दुस्तान जिंक लि. की चेयरपर्सन एवं नॉन एक्जीक्यूटीव डायरेक्टर वेदांता लि. प्रिया अग्रवाल हैबर ने कहा कि भारत में क्रिकेट एक खेल से अधिक है और चैंप में क्रिकेट स्टेडियम हर उस खिलाड़ी को अवसर देगा जो क्रिकेट में देश का प्रतिनिधित्व करने की इच्छाशक्ति रखता है।

ज़िंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरूण मिश्रा ने कहा कि राजस्थान में क्रिकेट के वृहद् विकास हेतु एक ऐतिहासिक शुरूआत की गयी है जिसके दूरगामी परिणाम देखने को मिलेंगे। ज़िंक राज्य में खेलों के विकास के साथ-साथ ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। वेदांता लि. की डायरेक्टर ग्रुप कम्युनिकेशन ऋतु झिंगोन ने कहा कि आज से 5 वर्ष पूर्व नवरात्रों में ही वेदांता समूह द्वारा नन्दघर योजना की शुरूआत की गयी थी। इस योजना के तहत उनकी कम्पनी गरीब व जरूरमंद बच्चों व महिलाओं को यथासंभव सहयोग प्रदान कर रही है।

इस अवसर पर प्रिया अग्रवाल हैबर ने एमोयू पर हस्ताक्षर होने के बाद 300 करोड़ रूपये के चैक का प्रतीक वैभव गहलोत को भेंट किया। आरसीए के कोषाध्यक्ष रामपाल शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में कुमार संघाकारा, शक्तिसिंह राठौड़, राजेश भड़ाना, फारूख अहमद, महेन्द्र शर्मा, एवं जी.एस.सन्धु उपस्थित थे।

राजस्थानी, पंजाबी रिमिक्स गानों पर छात्राओं ने दी जमकर प्रस्तुतियां

उदयपुर (ह. सं.)। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी कन्या महाविद्यालय की ओर से आयोजित वार्षिकोत्सव - सिद्धिदात्री 2023 में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत, प्रो. आईजे माथुर, प्राचार्य डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

आयोजन सचिव डॉ. रेखा कुमावत ने बताया कि कार्यक्रम में छात्राओं ने बन्नी थारो चांद सरीखों मुखड़ो, नजर नहीं लग जाय ...., म्हारा छैल भंवर सौ कांगसियो ..., सहित राजस्थानी, पंजाबी रिमिक्स, दुर्गा स्तुति, चरी नृत्य, एकल नृत्य, गुजराती गरबा नृत्य पर जमकर प्रस्तुतियां दी। समारोह में गायत्री सालवी को मिस एमवीएस का ताज पहनाया गया। कंचन सिसोदिया, कोमल सेन रनरअप रही।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि जीवन में सफलता के लिए विद्यार्थियों का 360 डिग्री पर सर्वांगींण विकास जरूरी है जिसका जिम्मा शिक्षकों का है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति एवं परम्परा हमारी पहचान है जिसको बचाने का जिम्मा युवाओं का है। समारोह में वर्षपर्यन्त आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। समारोह में डॉ. नीति पालीवाल, डॉ. जयसिंह जोधा, डॉ. गुणबाला आमेटा, अलका श्रीवास्तव, कैलाश आमेटा, जगदीश सालवी उपस्थित थे।

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

Umarda Railway Station Road, Udaipur
Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

PIMS Students Outperforms in NEET PG 2023

Harsh Chauhan Score : 604
Anushka Dhawan Score : 534
Patel Abhi Manish Kumar Score : 532
Kanishka Agarwal Score : 529
Patel Sheelkumar Score : 520
Radhika Lunagariya Score : 520
Variya Ved Score : 517

ADMISSION OPEN 2023-24

VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
Approved by RPC

- Diploma (2 Years)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology

8209500035, 9587890082

VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY & MASS COMMUNICATION

- FASHION DESIGNING
- INTERIOR DESIGNING
  - Diploma (1 Year)
  - Adv. Diploma (2 Years)
  - B.Voc (3 Years) M.Voc (2 Years)
  - B.Des (4 Years) M.Des (2 Years)

- FINE ARTS
  - BFA (4 Years) MFA (2 Years)

- JOURNALISM & MASS COMMUNICATION
  - D-JMC (1 Years)
  - BA-JMC (3 Years) MA-JMC (2 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
- B.P.T. (4.5 Years)
- M.P.T. (2 Years)

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
Approved by INC
- G.N.M. (3 Years)

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING
Approved by INC
- B.Sc. Nursing (4 Years)
- Medical Surgical Nursing
- Child Health Nursing
- Obstertric & Gynaecological
- M.Sc. Nursing (2 Years)
- Community Health Nursing
- Mental Health Nursing

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Approved by NMC
- M.B.B.S. (4.5 Years + 1 Year Internship)
- MD/MS (3 Years)
- M.Sc. in Medical Sciences [Non-Clinical] (3 Years)

Umarda Railway Station Road, Udaipur
Contact: 0294 - 3510000, 8696440666 Web : www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।